वर्ष-2, अंक 8, अगस्त, 2019

राज भवन

संवाद

राज भवन, बिहार की मासिक पत्रिका

विशेष आकर्षण

महामहिम राज्यपाल (मनोनीत) श्री फागू चौहान का पटना पहुँचने पर किया गया स्वागत

बिहार के नवनियुक्त राज्यपाल माननीय श्री फागू चौहान आज अपराह्न 05:00 बजे लोकनायक जयप्रकाश नारायण अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, पटना विशेष वायुयान से पहुँचे।

पटना हवाई अड्डे पर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने नवनियुक्त महामहिम राज्यपाल (मनोनीत) श्री फागू चौहान को पुष्प–गुच्छ समर्पित कर उनका स्वागत किया। उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी, बिहार मंत्रिपरिषद् के कई सदस्यों आदि ने भी इस मौके पर नवनियुक्त माननीय राज्यपाल श्री चौहान का अभिवादन करते हुए स्वागत किया।

महामहिम राज्यपाल (मनोनीत) को पटना हवाई अड्डे के स्टेट हैंगर में गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया।

इस अवसर पर मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक, प्रधान सचिव, मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग तथा राज्य के वरीय प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारीगण आदि ने भी राज्यपाल का अभिवादन किया। स्टेट हैंगर में विभिन्न राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों–नेताओं, सामाजिक–राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं एवं गणमान्य लोगों आदि ने माननीय श्री चौहान का सादर अभिनन्दन किया।

राजभवन, पटना पहुँचने पर नवनियुक्त राज्यपाल श्री चौहान का राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने पुष्प–गुच्छ समर्पित कर स्वागत किया। राज्यपाल सचिवालय के सभी वरीय अधिकारियों व राजभवन–कर्मियों ने राज्यपाल को अभिवादन करते हुए उनका स्वागत किया।

इस माह हमने 74वें 'स्वतंत्रता–दिवस' का भव्य आयोजन अपने–अपने कार्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों में किया है। हमारा देश एक संप्रभुतासम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में पूरे विश्व में काफी प्रतिष्ठा अर्जित कर चुका है। अनगिनत बलिदानों तथा स्वतंत्रता–सेनानियों के त्याग और संघर्ष की बदौलत 15 अगस्त 1947 को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में विश्व के नक्शे पर हमारी पहचान उभरी थी।

एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में सत्य, अहिंसा, सह–अस्तित्व, धर्मनिरपेक्षता, शांति, विश्वमैत्री, सामाजिक समरसता तथा सद्भावना के रास्ते पर चलते हुए हमने एक विकासशील राष्ट्र के रूप में सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है।

अपनी समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासतों के प्रति गौरवान्वित और श्रद्धान्वित रहते हुए हमने विकास के सभी मानकों पर अपने को खरा सिद्ध किया है। भौतिक उपलब्धियों और आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ, अपनी सांस्कृतिक वैभवशीलता और आध्यात्मिक गुरूता के फलस्वरूप आज एक नये भारत का अभ्युदय हो रहा है, जहाँ ज्ञान–विज्ञान के सभी प्रक्षेत्रों का भी सम्यक् विकास हो रहा है। कृषि उद्योग, तकनीकी और संचार जगत् की प्रगति तथा अंतरिक्ष जगत् में भी हमारी उपलब्धियों का सीधा लाभ सभी भारतीयों को मिल रहा है। सामाजिक समानता, शिक्षा, आर्थिक समृद्धि, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास, सांस्कृतिक उत्थान –सभी दिशाओं में तेजी से बढ़ रहे हमारे चरण करोड़ों भारतीयों के त्याग, संघर्ष, प्रतिभा और तत्परता के परिणाम हैं।

बिहार की विकास–दर भी लगातार कई वर्षों से दो अंकों में बनी हुई है जो राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है। शिक्षा–विकास की दृष्टि से भी केन्द्र एवं राज्य सरकार पूरी गंभीरता से तत्पर हैं।

बिहार के नये महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान, जो विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति भी हैं, ने राज्य की उच्च शिक्षा में गुणवत्ता–विकास के प्रयासों को और अधिक तेज करने का निदेश प्रदान किया है। 'हर परिसर – हरा परिसर' के अंतर्गत वृक्षारोपण, 'तरंग' और 'एकलव्य' का सांस्कृतिक आयोजन, शैक्षणिक सत्रों का नियमित संचालन तथा 'यू॰एम॰आई॰एस॰' का सफल कार्यान्वयन आदि तात्कालिक कार्यों को हमें सक्रियतापूर्वक पूरा करना है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की '150वीं जयन्ती' के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन की रूपरेखा को भी हमें अंतिम रूप देना है।

हमें पूरा विश्वास है कि नये महामहिम राज्यपाल के अनुभवी मार्ग–दर्शन में उच्च शिक्षा के विकास के अपने एजेन्डे पर पूरी तत्परता और दृढ़निश्चयता के साथ हम तेजी से आगे बढ़ेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(ब्रजेश मेहरोत्रा)
राज्यपाल के प्रधान सचिव

वर्ष-2, अंक-8, अगस्त 2019
प्रधान सम्पादक
विवेक कुमार सिंह

कार्यकारी सम्पादक
विनोद कुमार

सम्पादक मंडल
संजय कुमार
सुनील कुमार पाठक

सम्पादकीय पता: जन-सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना-22
ई मेल- pr.rajbhavan@gmail.com
दूरभाष- 0612-2786119

इस अंक में

•
• विश्वविद्यालय परिसर
• विविधा
• शिष्टाचार

श्री फागू चौहान ने बिहार के राज्यपाल के पद की शपथ ली

माननीय श्री फागू चौहान को राजभवन परिसर स्थित राजेन्द्र मंडप में महामहिम राज्यपाल, बिहार के पद की शपथ दिलाई गई। माननीय पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति श्री अमरेश्वर प्रताप साही ने राज्यपाल श्री चौहान को शपथ दिलाई।

भारतीय स्वतंत्रता– प्राप्ति के पश्चात् बिहार के 40वें महामहिम राज्यपाल के रूप में श्री फागू चौहान ने शपथ ली।

राज्यपाल ने हिन्दी भाषा में निम्नवत शपथ ली– ''मैं, फागू चौहान, ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं श्रद्धापूर्वक बिहार के राज्यपाल के पद का कार्यपालन करूँगा तथा अपनी पूरी योग्यता से संविधान और विधि का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करूँगा और मैं बिहार की जनता की सेवा और कल्याण में निरत रहूँगा।''

शपथ–ग्रहण–समारोह में बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री

नीतीश कुमार, उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी, बिहार सरकार के कई मंत्रीगण, बिहार विधान परिषद् में नेता–प्रतिपक्ष श्रीमती राबड़ी देवी, लेडी गवर्नर श्रीमती मुराही देवी, पटना नगर निगम की मेयर श्रीमती सीता साहू, बिहार के लोकायुक्त, महाधिवक्ता, बिहार विधानमंडल के

कई सदस्यगण, विभिन्न आयोगों/समितियों/बोर्डों/निगमों/प्राधिकारों आदि के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष, बिहार सरकार के वरीय प्रशासनिक अधिकारीगण, विभिन्न राजनीतिक दलों एवं सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी एवं प्रतिनिधिगण, महामहिम राज्यपाल के कई पारिवारिक जन तथा अन्य गणमान्य अतिथि आदि उपस्थित थे।

महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने शपथ लेने के बाद प्रथम दिन ही कार्यारंभ किय

महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने राजभवन के राजेन्द्र मंडप में शपथ–ग्रहण के पश्चात, अतिथियों के साथ अल्पाहार एवं मुलाकात के बाद, संचिकाओं का निष्पादन भी प्रारंभ कर दिया।

राज्यपाल श्री चौहान ने कार्यारंभ करते हुए मुंगेर विश्वविद्यालय को मुंगेर में आगामी 21 अगस्त, 2019 को "Science, Yoga & Innovations : Transforming Higher Education through Knowledge interfaces" (विज्ञान, योग एवं नवाचार– ज्ञान के जरिये उच्च शिक्षा में बदलाव) –विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने की स्वीकृति प्रदान कर दी। महामहिम राज्यपाल श्री चौहान को प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने राज्यपाल सचिवालय की गतिविधियों तथा कुलाधिपति के रूप में उनके निर्धारित कार्यों से अवगत कराया और विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा के विकास हेतु किए जा रहे प्रयासों की संक्षिप्त जानकारी भी दी।

इसके पूर्व महामहिम राज्यपाल ने माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, माननीय बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री

विजय कुमार चौधरी, माननीय मुख्य न्यायाधिपति, पटना उच्च न्यायालय श्री अमरेश्वर प्रताप साही आदि अतिथियों के साथ अल्पाहार ग्रहण करने के पश्चात, उत्तर प्रदेश राज्य के विभिन्न जिलों से आए अपने शुभचिन्तकों–प्रशंसकों आदि से भी मुलाकात की। राजभवन के दरबार हॉल में अपने गृह जिले एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए अतिथियों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने अपने 'शपथ–ग्रहण– समारोह' में शामिल होने पर उन सबके प्रति आभार व्यक्त किया एवं कहा कि वे महामहिम राज्यपाल के रूप में अपने कार्यों में व्यस्तता में से समय निकालकर यथासमय क्षेत्र के लोगों से भी मिलते रहेंगे। राज्यपाल ने अपने पारिवारिक सदस्यों तथा अपने गृह राज्य से आए अतिथियों के साथ अपनी तस्वीरें भी खिंचवायी। महामहिम राज्यपाल से आज कई नेतागण, गणमान्यजन, कुलपतिगण, शिक्षाविद् आदि ने शिष्टाचार भी मुलाकात की।

राज्यपाल ने कहा कि आम जनता से मिली शक्ति और सहयोग के बल पर ही उन्होंने सभी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की है और वे भविष्य में भी व्यापक जनहित के प्रति सदैव तत्पर और सचेष्ट रहेंगे।

राज्यपाल के कहा कि बिहार में उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों को और अधिक गति प्रदान की जायेगी।

महामहिम राज्यपाल को ''नये भारत के निर्माण हेतु बिहार में उच्च शिक्षा के विकास-प्रयास'' शीर्षक पुस्तक की प्रथम प्रति समर्पित की गई

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन को राजभवन सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में राजभवन, पटना द्वारा ''नये भारत के निर्माण हेतु बिहार में उच्च शिक्षा के विकास–प्रयास'' शीर्षक पुस्तक की प्रथम प्रति राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह द्वारा सादर समर्पित की गई। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग श्री आर.के. महाजन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रधान सचिव एवं पुस्तक के प्रधान संपादक श्री विवेक कुमार सिंह ने बताया कि पुस्तक में विगत तीन सौ दिनों के उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों और प्रमुख उपलब्धियों का उल्लेख है।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने कहा कि बिहार में उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों के केन्द्र में प्रमुखतः छात्र–हित को रखते हुए छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने, उनका सर्वांगीण विकास और कौशल–उन्नयन करने तथा उनके कल्याण हेतु विभिन्न योजनाएँ कार्यान्वित करने को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों के सार्थक परिणाम सामने आते देख राज्य में लोगों का विश्वास तो बढ़ा ही है, पूरे देश के लोग भी इस बदलाव को आशा भरी नजरों से देख रहे हैं।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि कुलपतियों की अबतक चार महत्वपूर्ण बैठकें आयोजित करते हुए उन्हें 'उच्च शिक्षा के विकास की रूपरेखा' पर तेजी से अमल करने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि राज्य के अधिकतर विश्वविद्यालयों में सत्र समय पर चलने लगे हैं तथा कुछेक विश्वविद्यालयों में लंबित परीक्षाएँ शीघ्र सम्पन्न करा ली जायेंगी।

राज्यपाल ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि इस वर्ष पहली बार (सिर्फ मगध विश्वविद्यालय को छोड़कर) सभी विश्वविद्यालयों में 'दीक्षांत समारोह' आयोजित किए गये हैं। राज्यपाल ने कहा कि प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों के सुदृढ़ीकरण तथा 'यू.एम.आई.एस.' (University Management Information System) के कार्यान्वयन हेतु राज्य सरकार द्वारा विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों को आवश्यक निधि उपलब्ध करायी गई है।

राज्यपाल ने कहा कि राज्य के सभी 260 अंगीभूत महाविद्यालयों को 'नैक प्रत्ययन' प्राप्त करने के लिए कहा गया है। जिन्हें पहले से नैक प्रत्ययन हासिल है, उन्हें ग्रेडिंग सुधारने की हिदायत दी गई है।

महामहिम राज्यपाल ने कहा कि पिछले दिनों राजभवन में 'संविधान दिवस', 'गाँधीवाद' पर सेमिनार, कृषि प्रदर्शनी–सह–किसान सम्मान समारोह, वीर नारी सम्मान–समारोह, 'भजन संध्या' आदि के आयोजन, 'राजभवन संवाद' पत्रिका, 'कॉफी टेबुल बुक' तथा 'राजभवन कैलेण्डर' के प्रकाशन, दरबार हॉल में महापुरूषों के आकर्षक तैल चित्र लगाने, जैसी विभिन्न नयी पहलें भी हुई हैं। उन्होंने पिछले दिनों बिहार के विश्वविद्यालयों में भारतीय परिधानों की व्यवस्था के कार्यान्वयन पर भी संतोष व्यक्त किया। राज्यपाल ने प्रधान सचिव एवं पुस्तक की संपादन–समिति को पुस्तक–प्रकाशन के लिए धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम में राजभवन के अधिकारियों ओ.एस.डी. (न्यायिक) श्री फूलचंद चौधरी, लॉ–ऑफिसर श्री आर.वी.एस. परमार, एन.आई.सी. पदाधिकारी श्री विजय कुमार सहित संपादन–समिति के सदस्यगण –अपर सचिव श्री विजय कुमार, राज्य हिन्दी प्रगति समिति के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण, प्रो. कलानाथ मिश्र, विशेष कार्य पदाधिकारी श्री संजय कुमार, राज्यपाल के जनसंपर्क पदाधिकारी डॉ. सुनील कुमार पाठक, राज्यपाल के आप्त सचिव श्री संजय चौधरी, राज्यपाल के निजी सहायक श्री विनय जोशी एवं डॉ. ध्रुव कुमार आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में धन्यवाद–ज्ञापन अपर सचिव श्री विजय कुमार ने किया, जबकि इसका संचालन जन–सम्पर्क अधिकारी डॉ. एस.के. पाठक ने किया।

भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का संरक्षण एवं संवर्द्धन नितान्त आवश्यक है–राज्यपाल

''भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का संरक्षण एवं संवर्द्धन नितांत आवश्यक है। भारतीय संस्कृति सदैव विश्वबंधुत्व में विश्वास करती रही है एवं इसमें विभिन्न तरह की विचारधाराओं, चिन्तन, दृष्टियों, दर्शन, परम्पराओं, रीतियों–नीतियों आदि का सम्मिलन होता रहा है। संस्कृत भाषा भी भारतीय चिन्तन और दर्शन के बहुमूल्य ज्ञान का संचित कोष रही है।'' –उक्त विचार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने राजभवन स्थित राजेन्द्र मंडप में दिनांक 09 जुलाई, 2019 को आयोजित 'राष्ट्रिय शास्त्रार्थ सभा' का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये।

राज्यपाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में बराबर परस्पर विरोधी विचार–धाराओं को भी पर्याप्त सम्मान मिला है। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में तलवारों, तोपों और रक्तपात के बल पर परिवर्तन घटित नहीं हुए हैं, बल्कि यहाँ परिवर्तन के लिए वैचारिक क्रांतियाँ हुई हैं। श्री टंडन ने कहा कि 'शास्त्रार्थ' इसी वैचारिक विमर्श की प्राचीन विधा है जिसके अंतर्गत वेदों, उपनिषदों, पुराणों और विभिन्न भारतीय ग्रन्थों के आधार पर किसी विषय में पर्याप्त तक–वितर्क, चिन्तन–मनन करते हुए निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

राज्यपाल ने कहा कि भारत में –मिथिला, काशी एवं दक्षिण की पांडित्य–परंपरा अत्यन्त समृद्ध रही है। उन्होंने इन तीनों शास्त्रार्थ–परम्पराओं का सम्मिलन प्रथम बार राजभवन में होने को एक सौभाग्यशाली अवसर बताया और कहा कि नयी पीढ़ी को इस शास्त्रार्थ–परम्परा के अवलोकन से काफी प्रेरणा मिलेगी। श्री टंडन ने कहा कि नयी पीढ़ी अपनी प्राचीन सांस्कृतिक और सारस्वत विरासत पर गौरवान्वित होकर नये भारत के निर्माण में उत्साहपूर्वक जुटेगी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में बराबर असहमतियों की गुंजाइश रही है। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में तथ्य, युक्ति, तर्क, चिन्तन सबको प्रधानता मिली है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति ने बराबर युगानुरूप अपने में परिवर्तन लाते हुए अपनी प्रासंगिकता बनाये रखी है।

कार्यक्रम में आगत अतिथियों का स्वागत एवं विषय–प्रवेश कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सर्वनारायण झा ने किया। आयोजित प्रथम मिथिला शैली की शास्त्रार्थ सभा में 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' विषय पर प्रो. शशिनाथ झा ने पूर्व पक्ष प्रस्तुत किया जबकि प्रो. सुरेश्वर झा ने सिद्धांत पक्ष रखा।

दूसरी शास्त्रार्थ सभा में काशी परम्परा की शास्त्रार्थ–विधि का प्रदर्शन प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी एवं प्रो. राजपूजन पांडेय द्वारा ''व्याप्तिलक्षणम्'' विषय पर किया गया, जिसके अंतर्गत यह विश्लेषित किया गया कि समस्या के आधार पर ही न्याय तक पहुँच बन पाती है।

तीसरी दाक्षिणात्य शास्त्रार्थ परम्परा के अंतर्गत प्रो. श्रीपाद सुब्रह्मण्यम् ने पूर्व पक्ष रखा, जबकि प्रो. पी.आर.वासुदेवन ने सिद्धांत पक्ष रखा।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन प्रतिकुलपति प्रो. सी.पी. सिंह द्वारा किया गया। प्रथम शास्त्रार्थ सभा में डॉ. गणेश्वर झा, द्वितीय में डॉ. महेश झा एवं तृतीय में डॉ. प्रियव्रत मिश्र ने हिन्दी में सारांश प्रस्तुति की। समारोह में महामहिम राज्यपाल ने विश्वविद्यालय पंचांगम् का विमोचन भी किया।

महामहिम राज्यपाल ने इस 'राष्ट्रीय शास्त्रार्थ सभा' में –प्रो. शशिनाथ झा, प्रो. सुरेश्वर झा, प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी, प्रो. राजपूजन पाण्डेय, प्रो. श्रीपाद सुब्रह्मण्यम् एवं प्रो. पी.आर. वासुदेवन को अंगवस्त्रम् एवं स्मृति–चिह्न प्रदान कर सम्मानित भी किया। कार्यक्रम में विधान परिषद् के कार्यकारी सभापति मो. हारून रशीद, बिहार के लोकायुक्त अध्यक्ष श्री श्याम किशोर शर्मा, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, प्रतिकुलपति, न्यायाधीशगण, जनप्रतिनिधिगण, अधिषद्–अभिषद् के सदस्यगण, बुद्धिजीवीगण, गणमान्य जन आदि उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय गाँवों को गोद लेकर कृषि एवं वानिकी की योजनाएँ कार्यान्वित करायें–राज्यपाल

''राज्य के विश्वविद्यालयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के साथ–साथ अपनी गुरूतर सामाजिक भूमिका भी निभाने को तत्पर रहना चाहिए।'' –उक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने राजभवन सभाकक्ष में बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर (भागलपुर) के लिए 05 योजनाओं का राजभवन से ही शुभारंभ करते हुए व्यक्त किए। ज्ञातव्य है कि बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के लिए पाँच योजनाओं –गंदा पानी साफ करने का संयंत्र संस्थापन (Sewage Treatment Plant), वर्षा जल संरक्षण (Rain Water Harvesting), वृक्षारोपण कार्यक्रम (Plantation), सौर ऊर्जा इकाई निर्माण (Solar Energy Unit) एवं शून्य बजट कृषि पद्धति (Zero Budget Farming) का आज शुभारंभ महामहिम राज्यपाल श्री टंडन द्वारा उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया।

राजभवन में उक्त अवसर पर बोलते हुए राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि संपूर्ण विश्व जल–संकट से जूझ रहा है। जल–संकट पर विचार करने के क्रम में जल–संचयन और वृक्षारोपण– दोनों अत्यावश्यक प्रतीत होता है। राज्यपाल ने कहा कि राज्य में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों को इस वर्ष 01 लाख वृक्षारोपण का लक्ष्य रखते हुए पर्यावरण–संतुलन के प्रति अपनी गंभीरता प्रदर्शित करनी चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि किसानों के लिए न्यूनतम लागत मूल्य बढ़ाने के साथ–साथ, यह आवश्यक है कि कृषि को यथासंभव अल्पव्ययी भी बनाने की भी तरकीब ढूँढी जाए। उन्होंने कहा कि 'जीरो बजट खेती' इस दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। राज्यपाल ने कहा कि सभी विश्वविद्यालयों को कम–से–कम एक गाँव प्रत्येक वर्ष गोद लेकर वहाँ उक्त पाँचों योजनाओं, यथा– गंदा पानी साफ कराने का संयंत्र लगवाने, वर्षा जल–संरक्षण हेतु प्रयास, वृक्षारोपण, सौर ऊर्जा इकाई स्थापना तथा जीरो बजट खेती को कार्यान्वित करते हुए उस गाँव को एक 'मॉडल गाँव' के रूप में विकसित करना चाहिए।

महामहिम राज्यपाल ने विश्वविद्यालय को हाल में मिली 18वीं रैंक एवं विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर को संपूर्ण देश में सर्वोत्तम कृषि विज्ञान केन्द्र के पुरस्कार प्राप्त होने पर बधाई दी साथ ही डॉ॰ अजय कुमार सिंह, कुलपति, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर को उनके उत्कृष्ट कार्यों एवं सफल नेतृत्व हेतु प्रशस्ति–पत्र भी प्रदान किया। इस अवसर पर महामहिम ने कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर, कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतास एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, औरंगाबाद के वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान को भी प्रशस्ति–पत्र देकर राजभवन की तरफ से सम्मानित किया।

कार्यक्रम में बोलते हुए कृषि मंत्री डॉ॰ प्रेम कुमार ने 'जीरो बजट खेती' एवं 'क्लाईमेंट स्मार्ट एग्रीकल्चर' का विशेष उल्लेख किया एवं कहा कि राज्यपाल ने सामान्य विश्वविद्यालयों को भी कृषि एवं वानिकी से जोड़ने की जो पहल की है, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के कुलपति डॉ॰ अजय कुमार सिंह ने कहा कि राज्य सरकार बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर को जो आर्थिक सहयोग और संसाधन मुहैय्या कराती है, वह पूरे देश में सर्वोच्च है। कुलपति ने कहा कि बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर में नामांकित होनेवाले सभी नये छात्र एक वृक्ष लगाकर अपने अध्ययन–काल में उसका संपोषण–संरक्षण करते हैं।

कार्यक्रम में निदेशक प्रसार (शिक्षा), बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा धन्यवाद–ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, निदेशक प्रसार (शिक्षा) डॉ॰ आर॰एन॰ सिंह सहित राज्यपाल सचिवालय एवं बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के वरीय पदाधिकारी आदि भी उपस्थित थे।

महामहिम राज्यपाल ने राजभवन परिसर में 'नक्षत्र वन' एवं 'धन्वन्तरि वाटिका' का उद्‌घाटन किया

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने राजभवन परिसर में 'नक्षत्र वन' एवं 'धन्वन्तरि वाटिका' का उद्‌घाटन किया।

इस अवसर पर बोलते हुए महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने कहा कि राजभवन परिसर के विस्तृत भू–खंड पर विभिन्न फलदार वृक्ष तो हैं ही, इस पर विभिन्न राशियों के अनुरूप वृक्षों को लगाकर तथा वनस्पति–जगत् में उपलब्ध विभिन्न औषधीय पौधों को 'धन्वन्तरि वाटिका' में लगाकर प्राचीन भारतीय मान्यताओं और पर्यावरण–चेतना के प्रति जन–जागृति बढ़ाने का सार्थक प्रयास किया गया है। श्री टंडन ने कहा कि प्रकृति के साथ मनुष्य की सहचरता अगर बनी रहती है तो उससे न मात्र मनुष्य के रोगों की सहज–सुलभ चिकित्सा हो जाएगी, बल्कि उनका ज्योतिषीय उपचार भी हो जाएगा। राज्यपाल ने कहा कि 'नक्षत्र वन' के वृक्षों के सानिध्य में आकर मानव–मन शांत और सकारात्मक विचारों वाला हो जाता है। राज्यपाल ने कहा कि आम लोगों के लिए भी राजभवन परिसर में स्थापित 'धन्वन्तरि वाटिका' एवं 'नक्षत्र वन' को अवलोकन के लिए उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि नक्षत्र की अवधारण प्राचीन खगोलशास्त्रियों द्वारा काल–निर्धारण की दिशा में किया गया विलक्षण योगदान है। उन्होंने बताया कि राजभवन स्थित 'नक्षत्र–वन' में 12 राशियों से जुड़े विभिन्न वृक्षों को लगाया गया है, जिनमें कुचिला, आँवला, गुलर, जामुन, खैर, शीशम, बाँस, पीपल, नागचंपा, बरगद, ढ़ाक, पाकड़, जूही, बेल, अर्जुन, गूगल, मौलश्री, सेमल, अमलताश, जलबेतस, कटहल, मदार, शमी, कदम्ब, आम एवं महुआ के वृक्ष प्रमुख हैं।

राजभवन की 'धन्वन्तरि–वाटिका' में 17–17 की दो कतार में 34 प्रकार के औषधीय पौधे लगाये गए हैं। इनमें प्रमुख हैं– सर्पगंधा, पीपली, अश्वगंधा, बासक, स्वीटलीफ, घृतकुमारी, एलोबेरा, लाजवंती, मुस्तक, म्लकागनी, मृगराज, सत्तावर, चिरैता (कालमेघ), अन्तमूल, चित्रक काला धतूरा, ब्रह्ममणि, हठजोड़, पुर्ननवा, वाच्च, भूमि आँवला, सफेद मूसली, बाकूची, दारू हादी, अजवाईन, कंठकरी, गुगुल, शंखपुष्पी, शालापर्णी, पत्थरचूर, जलजामुनी तथा सदाबहार। इस 'धन्वन्तरि वाटिका' में तीन तरह के तुलसी पौधे, यथा–लवंग तुलसी, श्याम तुलसी एवं कपूर तुलसी भी उपलब्ध है।

'नक्षत्र वन' एवं 'धन्वन्तरि वाटिका' के उद्‌घाटन कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव (शिक्षा) श्री आर॰के॰ महाजन, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल सचिवालय तथा वन–पर्यावरण विभाग के वरीय अधिकारीगण आदि भी उपस्थित थे।

महामहिम राज्यपाल की अध्यक्षता में विश्वविद्यालयों में शिक्षण की अनुषंगी गतिविधियाँ संचालित करने हेतु उच्चस्तरीय बैठक हुई

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन की अध्यक्षता में राजभवन सभाकक्ष में एक उच्चस्तरीय बैठक हुई, जिसमें राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के प्रधान सचिव/सचिव तथा राज्यपाल सचिवालय के वरीय अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में विश्वविद्यालयों में –'क्लीन कैम्पस, ग्रीन कैम्पस' के तहत वृक्षारोपण अभियान संचालित करने, सोलर ऊर्जा की व्यवस्था कराने, क्रीड़ा एवं अन्य अनुषंगी आधारभूत संरचनाओं का विकास करने, 'जीरो बजट' के आधार पर कृषि को प्रोत्साहित करने, वर्षा–जल के संचयन करने, स्वच्छता अभियान चलाने, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन करने, विश्वविद्यालयों द्वारा गाँवों को गोद लेने तथा अन्य विविध विषयों पर आवश्यक विचार–विमर्श हुआ तथा सार्थक निर्णय लिए गये।

बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक वातावरण में सुधार हो रहा है तथा अब यह जरूरी है कि शिक्षा के साथ–साथ सांस्कृतिक महौल बनाये रखने एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों से भी विद्यार्थियों को जोड़ने हेतु सार्थक प्रयास किए जाएँ। राज्यपाल ने कहा कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ, सामाजिक दायित्वों के प्रति भी विद्यार्थियों में संचेतना विकसित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालयों को ठोस पहल करनी चाहिए। श्री टंडन ने कहा कि पर्यावरण–चेतना विकसित करते हुए विद्यार्थियों को यह बताया जाना चाहिए कि जल–संचयन की प्रवृति वर्तमान शताब्दी की सबसे बड़ी जरूरत है।

राज्यपाल ने कहा कि 'नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के प्रारूप में शिक्षा को बहुमुखी बनाने की पहल की गई है तथा उसके जरिये शिक्षा को सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति से सीधे जोड़ने के प्रयत्न किए गये हैं। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों का उद्देश्य ऐसे छात्रों को तैयार करना होना चाहिए जो राष्ट्रीय प्रगति में सीधे तौर पर अपना योगदान दे सकें। राज्यपाल ने कहा कि 'यूनिवर्सिटीज' संपूर्ण यूनिवर्स (ब्रह्मांड) के बारे में शिक्षा देती हैं, अतएव यह आवश्यक है कि सभी विश्वविद्यालय युगीन जरूरतों के अनुरूप शिक्षण–व्यवस्था को संचालित करें।

राज्यपाल ने कहा कि प्रत्येक विश्वविद्यालय को वर्तमान बरसाती मौसम में 'वन महोत्सव' का आयोजन करना है। उन्होंने बैठक में सभी कुलपतियों को निदेशित किया कि इस वर्ष विश्वविद्यालयों को शिक्षकों एवं छात्रों की पूरी सहभागिता के साथ कम–से–कम एक लाख वृक्षारोपण करना है, जिसमें सभी तरह के पौधे शामिल हों। उन्होंने कहा कि कुलपति प्रमंडल स्तर पर वन–प्रमंडल पदाधिकारियों से सम्पर्क कर वृक्ष प्राप्त करते हुए आवश्यक सभी व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करायेंगे। बैठक में वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने बताया कि विभाग 'वन महोत्सव' के लिए महोगनी, शीशम, सागवान, सीरिस, गम्हार, चम्पा, मौलश्री, अमलतास, कचनार, पीपल, पाकड़, नीम, गुलर, जामुन, बेल कटहल, करंज, आँवला, जामुन आदि वृक्ष विश्वविद्यालयों को उपलब्ध करा देगा। उन्होंने राज्यपाल को बताया कि वन विभाग सभी विश्वविद्यालयों में 'एक हर्बल गार्डेन' स्थापित कराने पर भी गंभीरता से विचार करेगा।

राज्यपाल ने कहा कि संभावित जल–संकट से निबटने की दृष्टि से विश्वविद्यालयों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि 'वर्षा जल संचयन' (Rain Water Harvesting) की माकूल व्यवस्था सभी विश्वविद्यालयों में होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्षा जल का शुद्धीकरण कर उसके समुचित उपयोग हेतु भी आवश्यक संयंत्र लगाये जाने चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसरों में अवस्थित सभी तालाबों की उड़ाही एवं उनके किनारे वृक्षारोपण सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने कुलपतियों को निदेशित किया कि सभी विश्वविद्यालय शीघ्र अपने परिसरों की चारदीवारी–निर्माण हेतु शिक्षा विभाग को शीघ्र प्रस्ताव भेजें ताकि बजटीय उपबंध कराते हुए विभाग राशि आबंटित कराने का निर्णय ले सके। श्री टंडन ने कहा कि चारदीवारी–निर्माण से विश्वविद्यालय की परिसंपत्तियाँ सुरक्षित रहेंगी तथा विश्वविद्यालय परिसर के सौन्दर्यीकरण में भी सहूलियत होगी।

राज्यपाल ने विश्वविद्यालय परिसर में 'सोलर प्लान्ट' लगाकर सौर ऊर्जा के माध्यम से प्रकाश–व्यवस्था एवं परिसर की अन्य आधारभूत संरचनाओं को ऊर्जान्वित करने का निदेश दिया। राज्यपाल ने इसके लिए आवश्यक प्रस्ताव शीघ्र संबंधित विभाग को भेजने का आदेश दिया।

राज्यपाल ने बैठक में कहा कि सभी विश्वविद्यालय गाँवों को गोद लेकर वहाँ 'जीरो बजट खेती' हेतु कृषकों को प्रेरित करेंगे। उन्होंने कहा कि संबंधित गाँव में 'जीरो बजट खेती' के तहत जैविक खेती एवं औषधीय पौधों को लगाया जाना भी सुनिश्चित होना चाहिए।

बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने कहा कि सभी विश्वविद्यालय महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति द्वारा आज दिये गये निदेशों की अनुपालन–स्थिति से निरंतर राज्यपाल सचिवालय को अवगत कराते रहेंगे ताकि आवश्यकतानुसार राज्य सरकार के संबंधित विभाग से आवश्यक सहयोग प्राप्त किया जा सके।

बैठक को संबोधित करते हुए अपर मुख्य सचिव (शिक्षा) श्री आर॰के॰ महाजन ने कहा कि विश्वविद्यालयों में चारदीवारी–निर्माण एवं सोलर–प्लांट की स्थापना हेतु विश्वविद्यालयों से प्रस्ताव प्राप्त होने पर विभाग राशि उपलब्ध कराने की कार्रवाई करेगा।

बैठक में नगर विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री चैतन्य प्रसाद ने कहा कि शहरी निकायों में 'Rain Water Harvesting' के तीन मॉडलों के अनुरूप उनका विभाग विश्वविद्यालयों को भी अपेक्षित सहयोग प्रदान करेगा।

बैठक में कृषि विभाग के प्रधान सचिव श्री सुधीर कुमार ने कहा कि 'जीरो बजट खेती' एवं विभाग से संबंधित विश्वविद्यालयों की अन्य सभी अपेक्षाओं को पूरा करने में कृषि विभाग भरपूर सहयोग करेगा। कला–संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव श्री रवि मनुभाई परमार ने विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों के विकास तथा विश्वविद्यालय–परिसरों में खेलकूद की गतिविधियों के विकास हेतु स्टेडियम निर्माण, इंडोर स्टेडियम निर्माण तथा प्रेक्षागृह निर्माण आदि में विश्वविद्यालय–प्रशासन को पूरा सहयोग करने की बात कही।

आज सम्पन्न बैठक में विश्वविद्यालयों के सभी कुलपतियों/प्रतिकुलपतियों के अतिरिक्त राज्यपाल सचिवालय एवं राज्य सरकार के संबंधित विभागों के वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

कौशलयुक्त युवा राष्ट्र-निर्माण के लिए आगे आयें-राज्यपाल

"सरकारी विभागों में नौकरी की सीमा है। ज्ञान-विज्ञान के कई ऐसे प्रक्षेत्र हैं, जहाँ कौशल-उन्नयन के जरिये युवा उत्कृष्ट कार्य-क्षमता का प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय निर्माण में योगदान दे सकते हैं तथा अपना आर्थिक सशक्तीकरण भी कर सकते हैं।"- उक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने आज ज्ञान भवन, पटना में आयोजित 'विश्व युवा-कौशल दिवस' के समापन-समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि प्राचीन भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था में सबको अपनी हुनरमंदी के प्रदर्शन का पूरा अवसर उपलब्ध था तथा सबको सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उन्होंने कहा कि गरीबी पहले भी थी, किन्तु सामाजिक सम्मान गरीब को भी पर्याप्त मिलता था।

राज्यपाल ने कहा कि भारतीय समाज में एक कहावत प्रचलित है -'उत्तम खेती मध्यम बान।' अर्थात् कृषि को भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अर्थोपार्जन का सबसे उत्कृष्ट जरिया माना गया था, फिर उसके बाद 'बान' अर्थात् व्यवसाय को ज्यादा लाभकारी माना गया है। राज्यपाल ने कहा कि नौकरी-चाकरी को पहले अच्छा नहीं माना जाता था और इसे स्वाभिमान-रक्षा के भी प्रतिकूल बताया जाता था। श्री टंडन ने कहा कि आज भी कृषि भारत में आर्थिक सशक्तीकरण का प्रमुख माध्यम बन सकता है। उन्होंने कृषकों को 'अन्नदाता' बताते हुए कहा कि आज किसानों की हित-रक्षा के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार दोनों काफी बेहतर प्रयास कर रही हैं। राज्यपाल ने कहा कि 'जैविक खेती' और 'जीरो बजट' खेती के फॉर्मूले तैयार हो गए हैं, जिनमें अत्यल्प लागत पर ऐसे कृषि-उत्पाद प्राप्त किए जा सकते हैं, जिनसे जमीन की उर्वरता भी सुरक्षित रहेगी और मानव-शरीर भी रुग्ण नहीं होगा। श्री टंडन ने कहा कि गो-पालन के जरिये दुग्ध तो उपलब्ध होगा ही, गो-मूत्र एवं गोबर से उर्वरक एवं कीटाणुनाशक दवाएँ भी प्राप्त हो जाएँगी। राज्यपाल ने युवाओं से कृषि क्षेत्र में आगे आते हुए इसमें अपनी हुनरमंदी से गुणवत्तापूर्ण कृषि-उत्पादन बढ़ाने तथा खाद्य-प्रसंस्करण के जरिये अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने की अपील की। राज्यपाल ने कहा कि बिहार की अर्थव्यवस्था का भी मूलाधार कृषि ही है, जिसके विकास हेतु 'रोड-मैप' के आलोक में युवाओं को बेहतर प्रयास करने चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि भारत की प्राचीन तकनीकी समृद्धि एवं नयी सोच दोनों का समन्वय करते हुए आधुनिक नये भारत का निर्माण संभव है। श्री टंडन ने कहा कि कम्प्यूटर-प्रशिक्षण, संवाद-कौशल, व्यवहार-कौशल आदि के जरिये समेकित कौशल-विकास करते हुए युवा आवश्यकता-आधारित रोजगार की ओर उन्मुख हो सकते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि आधुनिक युग तालीम और हुनर का युग है। कौशलयुक्त युवाओं के बल पर ही नये भारत का निर्माण संभव है। श्री टंडन ने कहा आज संसाधनों की कमी नहीं है, विभिन्न सरकारी योजनाओं के जरिये युवाओं का भरपूर वित्त-पोषण भी हो रहा है। देश का नेतृत्व भी युवाओं को आधुनिक तकनीकी योग्यताओं और कौशल-उन्नयन के जरिये आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्यपाल ने कहा कि भारतीय युवा भाग्यशाली हैं कि आज वे नये भारत के निर्माण में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

राज्यपाल ने कई लघु कथाओं के माध्यम से युवाओ के साथ अपने व्यावहारिक अनुभव साझा करते हुए कहा कि थोड़ी सी बुद्धि और कार्यकुशलता के बल पर अर्थोपार्जन में आज कोई परेशानी नहीं है। श्री टंडन ने कहा कि गरीबों को 'सर्वहारा' माननेवाली राजनीति के दिन अब लद गये; गरीब और अभिवंचित हुनरमंदी के बल पर आर्थिक रूप से सशक्त होकर समाज में भरपूर सम्मान प्राप्त कर रहे हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विज्ञान एवं प्रावैधिकी मंत्री श्री जय कुमार सिंह ने कहा कि युवाओं के कौशल-विकास हेतु सरकार प्रतिबद्ध है और इसके लिए विभिन्न विभागों के माध्यम से योजनाएँ संचालित हो रही हैं। राज्य के श्रम-संसाधन मंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि राज्य सरकार के विभिन्न विभागों, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों, कई औद्योगिकी शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों आदि के सहयोग से श्रम संसाधन विभाग ने इस बार युवकों के कौशल-विकास के लिए विभिन्न विशेषज्ञों को बुलाकर समुचित प्रबोधन कराया है। उन्होंने कहा कि चीन की तरह भारत में वार्धक्य कोई समस्या नहीं है, यहाँ की युवा-शक्ति को कौशलयुक्त बनाते हुए राष्ट्रनिर्माण के सपने को पूरा किया जाएगा।

कार्यक्रम में राज्य के विकास आयुक्त श्री सुभाष शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। समापन-समारोह में स्वागत-भाषण श्रम संसाधन विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने किया जबकि धन्यवाद-ज्ञापन अपर मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी श्री धर्मेन्द्र सिंह ने किया। समारोह में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, श्रमायुक्त श्री गोपाल मीणा सहित विभिन्न विभागों के प्रधान सचिव/सचिव, वरीय अधिकारीगण तथा 'बिहार कौशल विकास मिशन' के अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

समारोह में राज्यपाल ने कौशल-विकास में बेहतर योगदान करनेवाले कृषि, स्वास्थ्य, विज्ञान एवं प्रावैधिकी, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, ग्रामीण विकास, नगर विकास, समाज कल्याण विभाग, गृह विभाग, 'जीविका परियोजना' आदि के प्रधान सचिवों/सचिवों, वरीय अधिकारियों तथा विभिन्न औद्योगिक संस्थाओं के पदाधिकारियों, युवा उद्यमियों तथा बक्सर, अरवल, सीवान, सारण एवं नालंदा के जिलाधिकारियों को भी पुरस्कृत-सम्मानित किया।

विश्वविद्यालय परिसर

पटना विश्वविद्यालय, पटना

पटना विश्वविद्यालय का त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल के साथ हाल ही में करार हुआ जिससे शोध, स्टूडेंट तथा फैकल्टी ऐक्सचेंज जैसे अनेकों रास्ते खुल जाएँगें। छात्र ऐक्सचेंज दोनों विश्वविद्यालयों के बीच आपसी विचार से तय समय पर होगा। शोध कार्यों में भी सम्मिलित प्रयास होंगे तथा फैकल्टी/अकादमिक सुविध भी साझा करेंगे। इसके अतिरिक्त दोनों विश्वविद्यालय अपने पेटेंट सुरक्षा तथा इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी अधिकार के क्षेत्रों में भी एक जुट होकर कार्य करेंगे। यह करार, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम भी साझा किए जाने हैं, अगले पाँच सालों के लिए किया गया है।

इस करार पर पटना विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो॰ रास बिहारी प्रसाद सिंह और कुलसचिव कर्नल मनोज मिश्रा तथा त्रिभुवन विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो॰ तीर्थराज कहनिया और मुख्य कार्यकारी निदेशक प्रो॰ रिद्धिश कुमार पोखरेल के हस्ताक्षर से संपन्न हुआ।

इस अवसर पर कुलपति प्रो॰ रास बिहारी प्रसाद सिंह ने कहा कि त्रिभुवन वि॰वि॰ पहले पटना वि॰वि॰ का ही अंग था और आज विश्व का इतना बड़ा विश्वविद्यालय बन गया। कार्यक्रम के आरंभ में प्रतिकुलपति प्रो॰ डॉली सिन्हा ने अतिथियों का स्वागत किया तथा अन्त में कुलसचिव कर्नल मनोज मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

स्नातकोत्तर गृहविज्ञान–आहार एवं पोषण विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर के व्याख्यान कक्ष में एफ॰एस॰एस॰आई॰ (फूड सेफ्टी स्टैण्डर्ड ऑथोरिटी ऑफ इन्डिया) के द्वारा चलाये गए फॉस्टेक प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला का आयोजन किया गया। एफ॰एस॰एस॰आई॰, भारत सरकार के द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम है, जिसका प्रयोजन खाद्य स्वच्छता और सुरक्षा से संबंधित है। इस आयोजन में प्रशिक्षक के रूप में डॉ॰ विकास कुमार (फूड सेफ्टी ऑडिटर–सह– प्रशिक्षक, वनसर्ट अंतर्राष्ट्रीय प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर) उपस्थित थे। डॉ॰ विकास कुमार ने पंजीकृत लगभगर 50 छात्र–छात्राओं, फेकेल्टी सदस्यों तथा विभाग के कर्मचारियों को पावर प्रेजेन्टेशन के माध्यम से खाद्य स्वच्छता और सुरक्षा के गुर सिखलाये एवं अस्वच्छता से होने वाली बीमारियाँ एवं इनकी गंभीरता के बारे में विस्तार से बतलाया। इस प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला के कार्यक्रम में जी॰एम॰पी॰जी॰एच॰ तथा एच॰ए॰सी॰सी॰पी॰ (HACCP : Hazard Analysis & Critical Control Points) के बारे में बतलाया गया।

इस प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला में विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ॰ अंजू सिंह, डॉ॰ शाहिद खानम, डॉ॰ ममता कुमारी, श्री रविन्द्र प्रसाद साह, श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, अरूण कुमार मंडल, अशोक कुमार दास एवं अन्य कर्मचारीगण एवं प्रथम, द्वितीय तथ तृतीय सेमेस्टर की छात्र–छात्राएँ तथा शोधार्थी भी उपस्थित थे।

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, स्थापना दिवस की रिपोर्ट

सृजन और नवनिर्माण का संकल्प लेते हुए तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय ने अपना 60वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस समारोह के मुख्य संरक्षक कुलपति प्रो॰ लीला चन्द साहा तथा संरक्षक प्रतिकुलपति प्रो॰ रामयतन प्रसाद थे। शहीद तिलका माँझी पर माल्यार्पण कुलध्वजारोहन और कुलगीत के साथ समारोह की शुरूआत हुई। इस ऐतिहासिक अवसर पर प्रति कुलपति प्रो॰ रामयतन प्रसाद ने विश्वविद्यालय का गौरवशाली इतिहास की याद दिलाते हुए कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर यहाँ के कुलपति रहे है और प्रो॰ बिलग्रामी एवं प्रो॰ दत्ता मुंशी जैसे राष्ट्रीय स्तर के अनेक विद्वान यहाँ के शिक्षक रहे हैं। इस अवसर पर प्रोक्टर प्रो॰ विलक्षण रविदास ने कहा कि 60 सालों में लोग बूढ़े होते हैं, लेकिन यह विश्वविद्यालय दिनों दिन जवान होता जा रहा है। कार्यक्रम में धन्यवाद–ज्ञापन संकायाध्यक्ष, छात्र कल्याण प्रो॰ योगेन्द्र ने किया।

बी॰एन॰ मंडल विश्वविद्यालय, भागलपुर

बी॰एन॰एम॰यू॰ के 27 वर्षों के इतिहास में पहली बार नार्थ कैम्पस में 26 जून से तीन जुलाई तक 17 बिहार बटालियन एन॰सी॰सी॰, सहरसा के संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण कैम्प आयोजित किया गया। इसमें मधेपुरा, सहरसा, सुपौल, पूर्णिया, भागलपुर, खगड़िया, मुंगेर आदि जिलों के 390 पुरूष एवं 110 महिला कैडेट ने भाग लिया। इसका उद्घाटन करते हुए कुलपति डॉ॰ अवध किशोर राय ने कहा कि एन॰सी॰सी॰ की राष्ट्र–निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके माध्यम से युवाओं में देशभक्ति का प्रचार–प्रसार होता है। कुलपति ने कहा कि एन॰सी॰सी॰ व्यक्ति–निर्माण, चरित्र–निर्माण एवं राष्ट्र–निर्माण का एक सशक्त माध्यम है। इसमें अधिकाधिक भागीदारी अपेक्षित है।

इस अवसर पर प्रति कुलपति डॉ॰ फारूक अली, कर्नल सार्थक घोष, कर्नल सतीश, सूबेदार ध्यान सिंह, सूबेदार भूपेन्द्र यादव, एन॰सी॰सी॰ पदाधिकारी गौतम कुमार, परिसंपदा पदाधिकारी बी॰पी॰ यादव, पीआरओ डॉ॰ सुधांशु शेखर आदि उपस्थित थे।

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

राज्य पशु आपदा प्रबंधन प्लान के निर्माण पर कार्यशाला का आयोजन

बिहार राज्य में आपदा के दौरान पशुओं के प्रबंधन को लेकर राज्य सरकार जल्द जी स्टेट एनिमल डिजास्टर मैनेजमेंट प्लान लेकर आ रही है। पशुपालन एवं मत्स्य संसाधन विभाग द्वारा इस प्लान को अमलीजामा पहनने का काम लगभग पूरा कर लिया गया है, इस प्लान को बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, वर्ल्ड एनिमल प्रोटेक्शन और पॉलिसी पर्सपेक्टिव फाउंडेशन ने मिलकर तैयार किया है। इस प्लान को लागू किये जाने से पहले त्रुटियों के परिशोधन, महत्वपूर्ण बिन्दुओं को जोड़ने तथा विशेषज्ञों द्वारा अवलोकन व सुझाव के दृष्टिकोण से एक कार्यशाला सह परिचर्चा का आयोजन बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय में आयोजित हुआ।

इस कार्यशाला का उद्घाटन बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के वाईस चेयरमैन व्यास जी, राज्य पशुपालन एवं मत्स्य संसाधन विभाग की सचिव डॉ॰ एन॰ विजयालक्ष्मी, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ रामेश्वर सिंह, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के वरिष्ठ सलाहकार ए॰के॰ सामैयार, के॰एम॰सिंह, पी॰एन॰ राय, यु॰के॰ मिश्रा ने दीप–प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर पशुपालन एवं मत्स्य संसाधन विभाग की सचिव डॉ॰ एन॰ विजयालक्ष्मी ने कहा कि आपदा के वक्त पशुओं का ख्याल रखना उतना ही आवश्यक है जितना की मनुष्यों को बचाना। उन्होंने आपदा के दौरान पशुओं के प्रबंधन पर लोगों के बीच जागरूकता फैलाने की बात कही साथ ही शारीरिक रूप से कार्य करने वाले मानव संसाधन तैयार करने पर जोर दिया। सचिव ने एनिमल डिजास्टर मैनेजमेंट प्लान में बर्ड फ्लू को भी जोड़ने की सलाह दी। बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ रामेश्वर सिंह ने कहा कि यह पूरे राज्य के लिए खुशी की बात है कि राज्य सरकार आपदा प्रबंधन को सर्वोच्च स्थान दे रही है। पिछले महीने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 1180 पशुचिकित्सकों को आपदा के दौरान पशुओं के प्रबंधन पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया जो बहुत कारगर सिद्ध हुआ। इस अवसर पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य पी॰एन॰ राय ने कहा कि मानव एवं पशुओं का सम्बन्ध बहुत गहरा है, बाढ़ और सुखाड़ की स्थिति में राज्य अपने जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहा है। सदस्य यू॰के॰ मिश्रा ने राष्ट्र के विभिन्न प्रतीकों पर पशुओं का महत्ता और पशुओं का मानव जीवन से लगाव पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के उद्घाटन के पूर्व बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के वरिष्ठ सलाहकार ए॰के॰ सामैयार ने अतिथियों और राज्य भर से आये हुए पशुचिकित्सकों का स्वागत किया और कार्यशाला पर संक्षिप्त विवरण पेश किया। पशुपालन एवं मत्स्य संसाधन विभाग के निदेशक डॉ॰ विनोद सिंह गुंजियाल ने एनिमल डिजास्टर मैनेजमेंट प्लान के प्रारूप पर विस्तृत चर्चा किया। इस अवसर पर बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय के डीन डॉ॰ जे॰के॰ प्रसाद, डॉ॰ गगन, डॉ॰ रविन्द्र कुमार सिंह, डॉ॰ गजेन्द्र शर्मा, डॉ॰ बिपिन कुमार राय, डॉ॰ पंकज कुमार, डॉ॰ सरोज कुमार आदि मौजूद थे।

विविधा

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन के सम्मान में राजभवन में विदाई–सभा आयोजित की गई

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन के सम्मान में आज राजभवन में उनकी विदाई–सभा आयोजित की गई, जिसमें राजभवन के सभी अधिकारियों एवं कर्मियों ने राज्यपाल को सादर विदाई दी। ज्ञातव्य है कि बिहार के 39वें महामहिम राज्यपाल के रूप में श्री लाल जी टंडन ने विगत 23 अगस्त, 2018 को शपथ ली थी।

राज्यपाल ने अपनी विदाई–सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मैंने अपने कार्यकाल में राजभवन की गरिमा और लोकोन्मुखता बढ़ाने का हरसंभव प्रयास किया। गरीबों, किसानों, सैनिक–विधवाओं, विद्यार्थियों, विद्वानों –सबके लिए मैंने विशेष कार्यक्रम आयोजित कराते हुए राजभवन को आम जनता से जोड़ने की भरपूर कोशिश की। उन्होंने कहा कि इस दौरान अनेक शिक्षाविदों ने राज्य का भ्रमण किया और अपना कुशल मार्ग–दर्शन प्रदान किया।

राज्यपाल श्री टंडन ने अत्यन्त भाव–विह्वल होते हुए कहा कि सबने मुझे अभिभावकवत सम्मान दिया और बिहारवासियों तथा राजभवन–परिवार ने एक बदलते–सँवरते बिहार के नवनिर्माण के प्रति अपनी पूरी प्रतिबद्धता और दृढ़निश्चयता व्यक्त की। श्री टंडन ने कहा कि बिहारवासियों से मिले प्यार और सम्मान को मैं आजीवन नहीं भूल पाऊँगा।

विदाई–सभा को राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, राज्यपाल के सलाहकार (उच्च शिक्षा) प्रो॰ आर॰सी॰ सोबती आदि ने भी संबोधित किया।

राज्यपाल के प्रधान सचिव ने महामहिम राज्यपाल श्री टंडन को राजभवन–परिवार की तरफ से स्मृति–चिह्न समर्पित किया। राज्यपाल को सभी पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने बारी–बारी से पुष्प–गुच्छ अर्पित किए। कार्यक्रम में धन्यवाद–ज्ञापन श्री विजय कुमार, अपर सचिव एवं संचालन डॉ॰ एस॰के॰ पाठक, राज्यपाल के जनसम्पर्क पदाधिकारी के किया। विदाई–सभा में राजभवन के सभी पदाधिकारी एवं कर्मीगण उपस्थित थे।

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन को सादर विदाई दी गई

(महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन से बिहार के माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने दिनांक 24 जुलाई, 2019 को राजभवन पहुँचकर शिष्टाचार मुलाकात की)

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन को 28 जुलाई, 2019 को पटना हवाई अड्डे पर पुष्प–गुच्छ देकर राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने सादर विदाई दी। महामहिम राज्यपाल को हवाई अड्डे पर माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, माननीय अध्यक्ष, बिहार विधान सभा श्री विजय कुमार चौधरी सहित बिहार मंत्रिपरिषद् के कई सदस्यगण, राज्य के मुख्य सचिव, प्रधान सचिव, मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग, पुलिस महानिदेशक, राज्यपाल के प्रधान सचिव, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव, पटना प्रमंडलीय आयुक्त, जिलाधिकारी एवं अन्य सभी वरीय अधिकारीगण आदि ने भी पुष्प–गुच्छ समर्पित कर सादर विदाई दी। महामहिम राज्यपाल को हवाई अड्डे पर सलामी भी दी गई। महामहिम राज्यपाल श्री टंडन अप॰ 1:30 बजे मध्य प्रदेश शासन के वायुयान से भोपाल के लिए प्रस्थान कर गये, जहाँ वे कल मध्य प्रदेश के राज्यपाल के रूप में शपथ–ग्रहण करेंगे।

(महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन से बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी ने दिनांक 25 जुलाई, 2019 को राजभवन पहुँचकर शिष्टाचार मुलाकात की)

इसके पूर्व राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने पुष्प–गुच्छ देकर राजभवन पटना से उन्हें विदा किया। राजभवन में सभी अधिकारियों एवं कर्मियों ने राज्यपाल को सादर विदाई दी।

(महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन से बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने दिनांक 24 जुलाई, 2019 को राजभवन पहुँचकर शिष्टाचार मुलाकात की)

(महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन से पटना उच्च न्यायालय माननीय मुख्य न्यायाधिपति श्री अमरेश्वर प्रताप साही ने दिनांक 24 जुलाई, 2019 को राजभवन पहुँचकर शिष्टाचार मुलाकात की)

(महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन से बिहार के माननीय शिक्षा मंत्री श्री कृष्ण नन्दन प्रसाद वर्मा ने दिनांक 26 जुलाई, 2019 को राजभवन पहुँचकर शिष्टाचार मुलाकात की)

शिष्टाचार

(माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने दिनांक 02 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में शिष्टाचार मुलाकात की)

(माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह से महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने दिनांक 02 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में शिष्टाचार मुलाकात की)

(माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह से महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने दिनांक 02 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में शिष्टाचार मुलाकात की)

बिहार के राज्यपाल

(स्वतंत्रता के बाद)

आर०डी० प्रधान

(29 जनवरी 1989 – 02 मार्च 1989)

ये भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक सेवानिवृत्त अधिकारी रहे हैं, साथ ही केन्द्रीय गृह सचिव तथा 'राजीव गाँधी सरकार' के दौरान अरूणाचल प्रदेश के राज्यपाल भी रहे हैं। श्री प्रधान ने 'असम समझौता' एवं 'मिजोरम समझौता' के हस्ताक्षरित होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

***

जगन्नाथ पहाड़िया

(03 मार्च, 1989 – 02 फरवरी, 1990)

ये 1980 से 1981 ई॰ तक राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे। कई वर्षों तक 'केन्द्रीय मंत्रिपरिषद्' में माननीय मंत्री रहने के साथ ही, ये दूसरी, चौथी, पाँचवी एवं सातवीं लोकसभा के भी माननीय सदस्य रहे। इन्होंने हरियाणा के राज्यपाल के रूप में भी अपनी सेवायें दी।

***

मुद्रक : लेजर प्रिंटर्स, पटना 4, फोन : 9334116085
laserpatna@gmail.com